

Chapter-8

रुबाइयाँ

Exercise 8.1

1 Mark Questions

प्रश्न 1. बच्चे की हँसी सबसे ज्यादा कब पूँजी है?

उत्तर: जब माँ अपने बच्चे को उछाल उछाल कर प्यार करती है तो बच्चे की हँसी सबसे ज्यादा पूँजती है। बच्चा खुले वातावरण में आकर बहुत खुशी महसूस करता है। जब वह ऊपर की ओर बारबार उछलता है तो वह रोमांचित हो उठता है।

प्रश्न 2. माँ बच्चे को किस प्रकार तैयार करती है?

उत्तर: माँ बच्चे को छलकते हुए निर्मल और स्वच्छ पानी से नहलाती है। उसके बालों में प्यार से कंघी करती है। उसे कपड़े पहनाती है। यह सारे कार्य देखकर बच्चा बहुत खुश होता है। वह ठंडे पानी से नहाकर ताजा महसूस करता है। अपनी माँ को प्यार से देखता है।

प्रश्न 3. बच्चा किस वस्तु के कारण लालची बन जाता है?

उत्तर: बच्चा जब चाँद को देखता है तो उसका मन लालची हो जाता है। वह चाँद को पकड़ने की जिद करता है। वह माँ से कहता है कि मुझे यही वस्तु चाहिए। चाँद को देखते ही उसका मन लालच से भर जाता है।

प्रश्न 4. क्या शायर भाग्यवादी है?

उत्तर: शायर बिलकुल भी भाग्यवादी नहीं है। उसे अपने भाग्य पर बिलकुल भरोसा नहीं। वह तो कहता है कि मैं और मेरी किस्मत दोनों मिलकर रोते हैं। वह मुझ पर रोती है और मैं उस पर रो लेता हूँ। दोनों परस्पर विरोधी हैं। इसलिए कह सकते हैं कि शायर भाग्यवादी नहीं कर्मवादी है। भाग्य की अपेक्षा उसे अपने कर्म पर विश्वास है।

प्रश्न 5. इश्क की फितरत को शायर ने क्या बताया है?

उत्तर: इश्क की फितरत अर्थात् आदत है कि इससे व्यक्ति को कुछ प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति जितना पाता है उतना ही नँवा भी देता है। इसलिए इश्क में कुछ पा लेना संभव ही नहीं है। किसी ने आज तक इश्क में कुछ भी नहीं पाया केवल खोया ही है। अपना चैन आँवाया है।

प्रश्न 6. फिराक गोरखपुरी की भाषाशैली पर विचार करें।

उत्तर: फिराक गोरखपुरी मूलतः शायर हैं। रुबाइयाँ भी उन्होंने लिखी हैं। इन सबके लिए उन्होंने प्रमुख रूप से उर्दू भाषा का प्रयोग किया है। खास बात यह है कि इनकी भाषा में कठिनाई नहीं है। हाँ, कुछ शब्द उलझाव पैदा करते हैं, लेकिन वे पाठक को कठिन नहीं लगते।

Exercise 8.2

2 Mark Questions

प्रश्न 1. गोरखपुरी की अलंकार योजना पर प्रकाश डालें।

उत्तर: फिराक ने कई अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है। इसलिए उनकी रुबाइयों और गजलों में अलंकारों का प्रयोग थोपा हुआ नहीं लगता। ये भावों और प्रसंगों के अनुकूल इनमें आए हैं। शायर ने मुख्य रूप से रूपक, उपमा, अनुप्रास, संदेह और पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का प्रयोग किया है।

प्रश्न 2. गोरखपुरी की रुबाइयों के कला पक्ष के बारे में बताएँ।

उत्तर: गोरखपुरी की रुबाइयाँ कलापक्ष की दृष्टि से बेहतरीन बन पड़ी हैं। भाषा सहज, सरल और प्रभावी हैं। भावानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है। उर्दू शब्दावली के साथसाथ शायर ने देशज संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी स्वाभाविक ढंग से किया है। लोका, पिन्हाती, पुते, लावे आदि शब्दों के प्रयोग से उनकी रुबाइयाँ अधिक प्रभावी बन पड़ी हैं।

प्रश्न 3. रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली छापी है घटा गगन की हलकीहलकी बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्चे भाई के हैं बाँधती चमकती राखी” इस रुबाई का कला सौंदर्य स्पष्ट करें।

उत्तर: भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली है। शायर ने उर्दू शब्दों के साथसाथ देशज शब्दों का भावानुकूल प्रयोग किया है। अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश और रूपक अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 4. काव्यसौंदर्य स्पष्ट करें आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ीहाथों पे झूलाती है उसे गोदभरीरहरह के हवा में जो लोका देती है गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

उत्तर: कवि बताता है कि माँ अपने चाँद जैसे बच्चे को आँगन में लिए खड़ी है। वह हाथों के झूले में झूला रही है। वह उसे हवा में धीरेधीरे उछाल रही है। इस काम से बच्चे की हँसी गूँज उठती है। ‘चाँद के टुकड़े’ में उपमा अलंकार है। ‘रहरह’ में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। बालसुलभ चेषाओं का वर्णन है। उर्दू मिश्रित शब्दावली है। गेयता है। दृश्य बिंब है। भाषा सहज व सरल है। उर्दू भाषा है।

प्रश्न 5.फिराक की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:फिराक की रुबाइयों में ग्रामीण अंचल के घरेलू रूप का स्वाभाविक चित्रण मिलता है। माँ अपने शिशु को आँगन में लिए खड़ी है। वह उसे झूलाती है। बच्चे को नहलाने का दृश्य दिल को छूने वाला है। दीवाली व रक्षाबंधन पर जिस माहौल को चित्रित किया गया है। वह आम जीवन से जुड़ा हुआ है। बच्चे का किसी वस्तु के लिए जिद करना तथा उसे किसी तरह बहलाने के दृश्य सभी परिवारों में पाए जाते हैं।

प्रश्न 6.रुबाइयाँ के आधार पर घर आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर:दीवाली के त्योहार पर पूरा घर रंगरोगन से पुता हुआ है। माँ अपने नन्हें बेटे को प्रसन्न करने के लिए चीनी मिट्टी के जगमगाते खिलौने लेकर आती है। वह बच्चों के घर में दीया जलाती है। इसी तरह राखी के समय आकाश में कालेकाले बादलों की हल्की घटा छाई हुई है। छोटी बहन ने पाँवों में पाजेब पहनी हुई है जो बिजली की तरह चमक रही है।

Exercise 8.3

4 Mark Questions

प्रश्न 1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर: शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि रक्षाबंधन सावन के महीने में आता है। इस समय आकाश में घटाएँ छाई होती हैं तथा उनमें बिजली भी चमकती है। राखी के लच्छे बिजली कौधने की तरह चमकते हैं। बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती है तथा राखी के लच्छे रिश्तों की पवित्रता को व्यक्त करते हैं। घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है।

प्रश्न 2. खुद का परदा खोलने से क्या आशय है?

उत्तर: परदा खोलने से आशय है – अपने बारे में बताना। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे की निंदा करता है या बुराई करता है। तो वह स्वयं की बुराई कर रहा है। इसीलिए शायर ने कहा कि मेरा परदा खोलने वाले अपना परदा खोल रहे हैं।

प्रश्न 3. किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं – इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तनातनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

उत्तर: कवि अपने भाग्य से कभी संतुष्ट नहीं रहा। किस्मत ने कभी उसका साथ नहीं दिया। वह अत्यधिक निराश हो जाता है। वह अपनी बदकिस्मती के लिए खीझता रहता है। दूसरे, कवि कर्महीन लोगों पर व्यंग्य करता है। कर्महीन लोग असफलता मिलने पर भाग्य को दोष देते हैं और किस्मत उनकी कर्महीनता को दोष देती है।

प्रश्न 4.टिप्पणी करें।

उत्तर:(क) गोदी के चाँद से आशय है – बच्चा और गगन के चाँद से आशय है – आसमान में निकलने वाला चाँद। इन दोनों में गहरा और नजदीकी रिश्ता है। दोनों में कई समनाताएँ हैं। आश्चर्य यह है कि गोदी का चाँद गगन के चाँद को पकड़ने के लिए उतावला रहता है तभी तो सूरदास को कहना पड़ा ”मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।”

(ख) रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार सावन के महीने में आता है। सावन की घटाएँ जब घिर आती हैं तो चारों ओर खुशी की बयार बहने लगती है। राखी का यह त्यौहार इस मौसम के द्वारा और अधिक सार्थक हो जाता है। सावन की कालीकाली घटाएँ भाई को संदेश देती हैं कि तेरी बहन तुझे याद कर रही है। यदि तू इस पवित्र त्योहार पर नहीं गया तो उसकी आँखों से मेरी ही तरह बूंदें टपक पड़ेगी।

प्रश्न 5.इन रुबाइयों से हिंदी, उर्दू और लोकभाषा के मिलेजुले प्रयोग को छाँटिए।

उत्तर:हिंदी के प्रयोग

- आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
- हाथों में झूलाती है उसे गोदभरी
- गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी
- किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
- दीवाली की शाम घर पुते और सजे
- रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
- छापी है घटा गगन की हलकीहलकी

Exercise 8.4

Summary

"रुबाइयाँ" एक रूपी छंद से निर्मित होता है जिसमें हर शेर चार मिस्र के पंक्तियों से बनता है। इसे 'रुबाई' भी कहा जाता है। रुबाइयाँ विभिन्न विषयों पर छोटीछोटी कहानियों या विचारों को प्रस्तुत करने के लिए एक अद्वितीय और सुंदर रूप हैं।

इनमें साधारित्य, भक्ति, प्रेम, आलोचना, और समाज के विभिन्न पहलुओं को सार्थक रूप से व्यक्त किया जा सकता है। रुबाइयाँ अक्सर एक सांगीतिक और मेलोडियस भाषा में होती हैं जो सुनने वालों को प्रभावित करने में सक्षम होती हैं।

यह छंद हिंदी, उर्दू, फारसी, अरबी, और कई अन्य भाषाओं में प्रचलित हैं और विभिन्न कवियों द्वारा अपनाए गए हैं। इसके माध्यम से कवि अपनी भावनाओं और विचारों को सुंदरता के साथ अभिव्यक्त कर सकते हैं।